फरीदाबाद
मजदूर समाचार

राहें तलाशने-बनाने के लिए मजदूरों के अनुभवों व विचारों के आदान-प्रदान के जरियों में एक जरिया

नई सीरीज नम्बर 207 सितम्बर 2005

कहत कबीर

पीड़ा के पहाड़ से पार पाने के लिये कंकड़ उठाने के महत्व को पहचानना असहायता के भ्रम को त्यागना है।

आप-हम क्या-क्या करते हैं... (11)

अपने स्वयं की चर्चायें कम की जाती हैं। खुद की जो बातें की जाती हैं वो भी अक्सर हाँकने- फाँकने वाली होती हैं, स्वयं को इक्कीस और अपने जैसों को उन्नीस दिखाने वाली होती हैं। या फिर, अपने बारे में हम उन बातों को करते हैं जो हमें जीवन में घटनायें लगती हैं — जब- तब हुई अथवा होने वाली बातें। अपने खुद के सामान्य दैनिक जीवन की चर्चायें बहुत- ही कम की जाती हैं। ऐसा क्यों है? ★ सहज- सामान्य को ओझल करना और असामान्य को उभारना ऊँच- नीच वाली समाज व्यवस्थाओं के आधार- स्तम्भों में लगता है। घटनायें और घटनाओं की रचना सिर- माथों पर बैठों की जीवनक्रिया है। विगत में भाण्ड- भाट- चारण- कलाकार लोग प्रभुओं के माफिक रंग- रोगन से सामान्य को असामान्य प्रस्तुत करते थे। छुटपुट घटनाओं को महाघटनाओं में बदल कर अमर कृतियों के स्वप्न देखे जाते थे। आज घटना- उद्योग के इर्दगिर्द विभिन्न कोटियों के विशेषज्ञों की कतारें लगी हैं। सिर- माथो वाले पिरामिडों के ताने- बाने का प्रभाव है और यह एक कारण है कि हम स्वयं के बारे में भी घटना- रूपी बातें करते हैं। ★ बातों के सतही, छिछली होने का कारण ऊँच- नीच वाली समाज व्यवस्था में व्यक्ति की स्थिति गौण होना लगता है। वर्तमान समाज में व्यक्ति इस कदर गौण हो गई है कि व्यक्ति का होना अथवा नहीं होना बराबर जैसा लगने लगा है। खुद को तीसमारखाँ प्रस्तुत करने, दूसरे को उन्नीस दिखाने की महामारी का यह एक कारण लगता है। ★ और, अपना सामान्य दैनिक जीवन हमें आमतौर पर इतना नीरस लगता है कि इसकी चर्चा स्वयं को ही अरुचिकर लगती है। सुनने वालों के लिये अक्सर "नया कुछ" नहीं होता इन बातों में। ★ हमें लगता है कि अपने- अपने सामान्य दैनिक जीवन को "अनदेखा करने की आदत" के पार जा कर हम देखना शुरू करेंगे तो बोझिल- उबाऊ- नीरस के दर्शन तो हमें होंगे ही, लेकिन यह ऊँच- नीच के स्तम्भों के रंग- रोगन को भी नोच देगा। तथा, अपने सामान्य दैनिक जीवन की चर्चा और अन्यों के सामान्य दैनिक जीवन की बातें सुनना सिर- माथों से बने स्तम्भों को डगमग कर देंगे। ★ कपडे बदलने के क्षणों में भी हमारे मन- मस्तिष्क में अक्सर कितना- कुछ होता है! लेकिन यहाँ हम बहुत- ही खुरदरे ढँग से आरम्भ कर पा रहे हैं। मित्रों के सामान्य दैनिक जीवन की झलक जारी है।

तेरह वर्षीय मजदूर : "सुबह ताजा नहीं उठता। सुस्ती में उठता हूँ, कभी फुर्ती नहीं आती। दिमाग में यही रहता है कि जाना है इसलिये काहे को जल्दी करना। रोज- रोज जाना होता है, जाने का समय बहुत जल्दी हो जाता है। छुट्टी नहीं — सिर्फ महीने के आखिरी रविवार को छुट्टी।

"नाश्ता कर और रोटी ले कर 9½ बजे घर से निकल लेता हूँ। माँ रोटी- सब्जी बनाये रखती है पर मैं सिर्फ रोटी ले जाता हूँ — दुकान पर अचार से खा लेता हूँ। आधे घण्टे का पैदल रास्ता है — रक्षाबन्धन से दो दिन पहले दुकान से मेरी साइकिल चोरी हो गई तब से पैदल मार्च करता हूँ। जाते समय सोचता हूँ कि दुकानदार कहीं मेरे से पहले न पहुँच जाये — डाँट मारता है। मेरी ड्युटी 10 बजे शुरू होती है।

"आमतौर पर मैं पहुँचता हूँ तब दुकान बन्द मिलती है। बगल वालों से झाड़ू माँग कर बाहर की सफाई करता हूँ। फिर बैठ कर इन्तजार करता हूँ — कभी- कभी काफी देर इन्तजार करना पड़ता है, आधा घण्टा तक।

"दुकान खुलते ही सामान बाहर निकालना। बहुत- सारा सामान होता है और बाहर सजाना होता है। पूरा सामान जचाने में 12½ बज जाते हैं और फिर मैं दुकान के अन्दर झाड़ू लगाता हूँ। बीच में थोडा- भी खड़े होने पर दुकानदार टोक देता है — काम करो। एक बजे तक कम्पलीट। सामान निकालते- जचाते समय बीच- बीच में ग्राहक भी आते रहते हैं।

"भोजन का कोई समय नहीं — 1 बजे के बाद और 4 से पहले। दोपहर में 2 से 4 बिक्री कुछ कम रहती है। तब छोटी- मोटी सफाई और दुकानदार बाहर होता है तब दूसरे लड़के के साथ बातें — हँसी- मजाक, उल्टे- सीधे गाने। दुकानदार के सामने नहीं — चिल्लायेगा।

"दिमाग में कुछ नहीं रखता ....

"पहले- पहल मैंने एक बिजली मोटर मरम्मत की दुकान पर काम किया। सीखना — पैसे नहीं। सुबह 9 से रात 7 बजे तक। घण्टों दुकान पर अकेला रहता तब मुझे नींद आ जाती। दुकानदार कहता कि सोया मत कर, कोई कुछ सामान उठा ले जायेगा। बगलवाले मुझे गाली देते..... खर्चा भी नहीं दिये जाने के कारण एक महीने बाद वहाँ काम छोड़ दिया।

"इण्डिया मैनेजमेन्ट ट्रेनिंग सैन्टर, सैक्टर- 11 में झुग्गियों के एक लड़के ने मुझे लगवाया। एक किलोमीटर पैदल चल कर सुबह 8½ बजे ड्युटी पर पहुँचता था। टेबल- कुर्सी, शीशे- खिड़कियाँ, दरवाजे- रेलिंग आदि बहुत- सी चीजों की सफाई करता और कभी- कभी झाड़ू- पौंछा भी लगाना पड़ता। दिन- भर चाय- पानी पकड़ाता। तनखा 900 रुपये — सोमवार की छुट्टी रहती थी। सैन्टर वालों ने 6 महीने बाद मुझे साइकिल दी थी। साँय 6 तक मेरी ड्युटी थी पर 6½- 7- 8 बजे तक छोड़ते। झुग्गियों से साइकिल चोरी हो गई तो मेरी तनखा में से 300 रुपये काट लिये। इस पर मैंने नौकरी छोड़ दी — वहाँ 9 महीने काम किया।

"मुजेसर में लोहे, ताम्बे की डाई बनाने वाली एक वर्कशॉप में लगा। वाले सुबह 9 से 6 की थे पर फिर 8½ से 6 कर दिया और रात सात तक छोड़ते। तनखा 600 रुपये। मैं छोटे पीसों में ड्रिल से छेद करता था। दिन में दो चाय देते। ज्यादा काम करवाते थे — मुण्डी भी इधर- उधर नहीं करने देते थे। वर्कशॉप वाला चला जाता तब उसका साला ज्यादा ही सिर पर चढता था, मार भी देता था। इसलिये मैंने गुस्से में नौकरी छोड़ दी। एक महीना 10 दिन काम किया था — 10 दिन के पैसे नहीं दिये।

"झुग्गियों के एक लड़के ने संजय कॉलोनी में वर्कशॉप में लगवाया। वहाँ कील में फँसा कर छोटी स्प्रिंग उँगली से मोड़नी पड़ती थी। उँगली सूज जाती थी। तीन दिन काम करवाने के बाद भी पैसे नहीं बताये तो मैंने छोड़ दिया।

"फिर मुजेसर में लोहे की डाई बनाने की वर्कशॉप में लगा। तनखा 1000 रुपये। रोज सुबह झाड़ू लगाता। कभी- कभी मशीन साफ करता। सामान पकड़ाता। एक बड़ी मशीन भी थोड़ी चला लेता। सुबह 8½ से 5 ड्युटी, दिन में 2 चाय, सही समय पर छोड देता, महीना होते ही पैसे। एक महीना काम करते हो गये तब बड़ी मशीन बेच दी.... बीस दिन बाद आना, दस दिन बाद आना.....

"अब यहाँ दुकान पर। पिताजी ने लगवाया। तनखा 1000 रुपये। झुग्गियों में पिताजी का डॉक्टरी का धन्धा चला नहीं और छुट-पुट इधर- उधर से गुजारा करने के बाद अब दिल्ली

(बाकी पेज चार पर)

मजदूर लाइब्रेरी, आटोपिन झुग्गी, एन. आई. टी. फरीदाबाद—121001 (यह जगह बाटा चौक और मुजेसर के बीच गंदे नाले की बगल में है।)

कानून हैं शोषण के लिये और छूट है कानून से परे शोषण की

कटते हाथ

के.आर. रबराइट मजदूर : "प्लॉट 37 डी सैक्टर-6 स्थित फैक्ट्री में काम करते 250 वरकरों में 10-12 ही स्थाई हैं। दो शिफ्ट हैं 12-12 घण्टे की। ठेकेदारों के जरिये रखे हैल्परों को 12 घण्टे रोज ड्युटी पर महीने के 2300 रुपये देते हैं। फैक्ट्री में मारुति कार के पार्ट्स बनते हैं — शीट मैटल का काम है और साल में 2-4 के हाथ तो कट ही जाते हैं। हाथ कटने पर नौकरी से निकाल देते हैं।"

वीनस मैटल वरकर : "प्लॉट 262 सैक्टर-24 स्थित फैक्ट्री में 50 स्थाई मजदूर हैं और 150 वरकर एक ठेकेदार के जरिये रखे गये हैं। दो शिफ्ट हैं 12-12 घण्टे की और ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। फैक्ट्री में मारुति कार के पार्ट्स बनते हैं और 40 पावर प्रेस हैं जिन पर साल में 5-6 के हाथ कट जाते हैं। हाथ कटने पर कम्पनी ई.एस.आई. अस्पताल पहुँचा देती है और फिर नौकरी से निकाल देती है।"

खण्डेलवाल प्रा.लि. मजदूर : "प्लॉट 68 सैक्टर-6 स्थित फैक्ट्री में एस्कोर्ट्स का शीट मैटल का काम होता है। हाथ कटते रहते हैं — प्रायवेट में इलाज करवा कर निकाल देते हैं। फैक्ट्री में काम करते 50 मजदूरों में से 2-4 की ही ई.एस.आई. व पी.एफ. हैं। सुबह 8 से रात 8½ बजे तक की शिफ्ट है — काम होने पर रात 12 बजे तक रोक लेते हैं। तनखा 1400-1700 रुपये।"

हरियाणा सरकार द्वारा निर्धारित कम से कम तनखा अकुशल मजदूर-हैल्पर के लिये 8 घण्टे की ड्युटी पर 90 रुपये 13 पैसे और महीने में 4 छुट्टी पर 2343 रुपये 37 पैसे... जुलाई05 की तनखा से देय डी.ए. अगस्त-अन्त तक घोषित नहीं।

इण्डिया फोर्ज मजदूर : "प्लॉट 28 सैक्टर-6 स्थित फैक्ट्री में हैल्परों की तनखा 1500-1600 रुपये और ऑपरेटरों की 1700-1800 रुपये। जुलाई की तनखा आज 18 अगस्त तक नहीं दी है। दो शिफ्ट हैं 12½-12½ घण्टे की और ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। फैक्ट्री में 500 मजदूर काम करते हैं।"

हिन्द हाइड्रोलिक्स वरकर : "प्लॉट 13 सैक्टर-24 स्थित फैक्ट्री में हैल्पर को 7 रुपये घण्टा के हिसाब से पैसे देते हैं। ड्युटी सुबह 8 से साँय 7½ तक। ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं — फैक्ट्री में 100 मजदूर काम करते हैं।"

ई.आर. मैटल मजदूर : "प्लॉट 299 सैक्टर-59 स्थित फैक्ट्री में हैल्पर की तनखा 1800 रुपये। ई.एस.आई. व पी.एफ. 40 मजदूरों में से 10 की ही।"

सिफ्टर इन्टरनेशनल वरकर : "प्लॉट 105 सैक्टर-25 स्थित फैक्ट्री में ठेकेदार के जरिये रखे हैल्पर की तनखा 1500 रुपये। ई.एस.आई. व पी.एफ. 50 मजदूरों में से 12 के ही।"

सुपर ऑटो मजदूर : "प्लॉट 84 सैक्टर-6 स्थित फैक्ट्री में ठेकेदारों के जरिये रखे हैल्पर की तनखा 1500 रुपये और जुलाई का वेतन 17 अगस्त को दिया। ई.एस.आई. व पी.एफ. 250 मजदूरों में से 10 के ही। सुबह 8½ बजे शिफ्ट शुरू और रात 9 बजे तक तो रोकते ही हैं।"

कन्डोर पावर प्रोडक्ट्स वरकर : "प्लॉट 22 सैक्टर-4 स्थित फैक्ट्री में ठेकेदार के जरिये रखे मजदूरों की तनखा 1800-2000 रुपये। ई.एस.आई. व पी.एफ. 50 मजदूरों में से 13 की ही।"

मोडर्न मशीन टूल्स मजदूर : "प्लॉट 119 एन एच 5 डी स्थित फैक्ट्री में 10 ठेकेदार हैं जो वरकरों को 1700-1800 रुपये तनखा देते हैं और वह भी 25-30 तारीख को जा कर। ई.एस.आई. व पी.एफ. 70 मजदूरों में से 12 की ही।"

आर.के. फोरजिंग वरकर : "प्लॉट 25 सैक्टर-6 स्थित फैक्ट्री में तनखा 1500 रुपये — 100 से ज्यादा मजदूर हैं। दो शिफ्ट — 12½ और 11½ घण्टे की। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। तनखा में से ई.एस.आई. व पी.एफ. के पैसे काटते हैं — ई.एस.आई. कार्ड किसी मजदूर को नहीं दिया है।"

तनखा 7 तारीख से पहले का कानून

रेलवे वरकर : "बल्लभगढ पुल से बाटा पुल के बीच रेल लाइनों के बोल्ट व चाबी टाइट करने का काम हम 22 लोग करते हैं। जून और जुलाई की तनखायें हमें आज 13 अगस्त तक नहीं दी हैं। बड़ा साहब बोलता है कि दे देंगे-दे देंगे। साहब के नीचे वाला बोलता है कि हर महीने के 250 रुपये कटेंगे — हम पैसे काटने से मना कर रहे हैं।"

अल्फा टोयो मजदूर : "प्लॉट 9 एच सैक्टर-6 स्थित फैक्ट्री में ठेकेदार के जरिये रखे हम वरकरों को जुलाई की तनखा 14 अगस्त को दी पर हस्ताक्षर हम से 6 अगस्त लिखवा कर करवाये।"

क्लच ऑटो, 12/4 मथुरा रोड़, जुलाई की तनखा 9 अगस्त को देनी शुरू कर 21 अगस्त को पूरी की; **सी एम आई,** 71 सै-6, में मई की तनखा 17 अगस्त को दी, जून और जुलाई की तनखायें बकाया; **सिकन्द लिमिटेड,** 61 इन्ड. एरिया, में जून की तनखा 1 अगस्त को दी, जुलाई का वेतन 12 अगस्त तक नहीं; **श्याम टैक्स इन्टरनेशनल,** 4 सै-6, में ठेकेदारों के जरिये रखे मजदूरों को जून की तनखा 31 जुलाई को दी और जुलाई का वेतन 20 अगस्त तक नहीं; **शिवालिक ग्लोबल,** 12/6 मथुरा रोड़, में कम्पनी द्वारा स्वयं भर्ती मजदूरों को जुलाई की तनखा 18-20 अगस्त को दी और ठेकेदारों के जरिये रखे वरकरों को 22 अगस्त तक नहीं; **नूकेम केमिकल,** 54 इन्ड. एरिया, में जून की तनखा 18 जुलाई को दी थी, जुलाई की 12 अगस्त तक नहीं; **एस पी एल,** 7 सै-6, में ठेकेदार के जरिये रखे मजदूरों को जुलाई की तनखा 18 अगस्त तक नहीं; **एस पी एल,** 48 सै-6, में ठेकेदारों के जरिये रखे वरकरों को जून की तनखा 28 जुलाई को दी थी, जुलाई का वेतन 20 अगस्त तक नहीं; ......

महलों की छत पर जाती है
हरदम मन बहलाने धूप
दुखियों के कच्चे आँगन तक
आयेगी कब जाने धूप
ऐसा लगता है इसमें कुछ साज़िश है
सूरज की भी
तब ही तो ठहरी है जा कर पूरी
एक ठिकाने धूप
मुफ़लिस को उलझाये रखती
सीलन और अँधेरों में
कोठों पर ज़रदारों के संग गाती रोज़ तराने धूप
खून- पसीना दे कर हम ने
जिस गुलशन को सींचा था
उस गुलशन में कभी न आई
गुंचा कोई खिलाने धूप
'सागर' तू उठते सूरज से उठ कर यूँ
समझौता कर
जिससे तेरी हर ख़िदमत को
खड़ी रहे सिरहाने धूप।
— रसूल अहमद 'सागर', रामपुरा

मजदूर समाचार में साझेदारी के लिये :
★ अपने अनुभव व विचार इसमें छपवा कर चर्चाओं को कुछ और बढवाइये। नाम नहीं बताये जाते और अपनी बातें छपवाने के कोई पैसे नहीं लगते। ★ बाँटने के लिये सड़क पर खड़ा होना जरूरी नहीं है। दोस्तों को पढवाने के लिये जितनी प्रतियाँ चाहियें उतनी मजदूर लाइब्रेरी से हर महीने 10 तारीख के बाद ले जाइये। ★ बाँटने वाले फ्री में यह करते हैं। सड़क पर मजदूर समाचार लेते समय इच्छा हो तो बेझिझक पैसे दे सकते हैं। रुपये- पैसे की दिक्कत है।

महीने में एक बार छापते हैं, 5000 प्रतियाँ फ्री बाँटते हैं। मजदूर समाचार में आपको कोई बात गलत लगे तो हमें अवश्य बतायें, अन्यथा भी चर्चाओं के लिए समय निकालें।

कुछ विस्तार... (पेज तीन का शेष)

कम्पनी में लगातार काम कर रहे मजदूरों के नाम इस ठेकेदार के खाते से उस ठेकेदार के खाते में चढाते रहते हैं। जबरन ओवर टाइम करवाते हैं — अधिकतर मजदूरों को 12-12 घण्टे की शिफ्टों में काम करना पड़ता है। ओवर टाइम का भुगतान सिंगल रेट से। डाइकास्टिंग में उत्पादन के लिये इतना दबाव रहता है कि पेशाब के लिये समय निकालना मुश्किल। हैल्परों को 1200-1400-1500-1600-1800-2000 रुपये तनखा। फैटलिंग मजदूरों की ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं, साप्ताहिक छुट्टी नहीं।"

कुछ विस्तार में

कास्टमास्टर मजदूर : "प्लॉट 64 सैक्टर-6 स्थित फैक्ट्री में 12 घण्टे ड्युटी नहीं करनी है तो बाहर जाओ। तनखा कम फैटलिंग विभाग में है, डाइकास्टिंग विभाग में नहीं – फरीदाबाद में डाइकास्टिंग की 200 से ज्यादा फैक्ट्रियाँ हैं और जानकार मजदूरों की कमी के कारण तनखा बढाने के लिये दबाव है। फैक्ट्री में ठेकेदारों के जरिये रखे वरकर 700 हैं – 15 दिन में एक छुट्टी देते हैं, महीने में दो छुट्टी करने पर बाहर। डाइकास्टिंग मशीनों का समय कम्प्युटर द्वारा निर्धारित है, हर घण्टे जाँच कि उत्पादन कम नहीं है। शिफ्ट बदलने के लिये रविवार को दिन में फैक्ट्री बन्द रहती है पर रात को 12 घण्टे चलती है। कास्टमास्टर में अन्दर जाने का समय निर्धारित है, बाहर निकलने का नहीं – प्रोडक्शन मैनेजर 15 घण्टे रोज फैक्ट्री में रहते-रहते पगला गया है और हर समय स्टाफ को झाड़ता रहता है।"

लखानी इण्डिया लिमिटेड वरकर : "प्लॉट 265-266 सैक्टर-24 स्थित फैक्ट्री में 4 महीनों से पुरुष मजदूरों की सुबह 8½ से रात 8½ और रात 8½ से अगले रोज सुबह 8½ बजे तक की शिफ्ट हैं तथा महिला मजदूरों की ड्युटी सुबह 8 से साँय 6½ बजे तक। ओवर टाइम को कम्पनी दस्तावेजों में दिखाती ही नहीं – ओवर टाइम के पैसे 12-15 रुपये प्रति घण्टा के हिसाब से देती है। पानी-पेशाब के लिये अनुमति-पत्र जरूरी है – 35 से 70 मजदूरों के बीच एक ऐसा पत्र है और वह बहुत मुश्किल से मिलता है। रात के 12 घण्टे में चाय नहीं, सिर्फ भोजन के लिये आधा घण्टा देते हैं। कैन्टीन में खाना बहुत खराब मिलता है और चाय तो नाम की ही होती है। भोजन अवकाश के समय भी फैक्ट्री से बाहर नहीं जाने देते। कुछ स्टाफ वाले कैजुअल वरकरों से बिना गाली के बात ही नहीं करते। मिक्सिंग विभाग में बहुत गन्दा पाउडर उड़ता है और भारी गर्मी रहती है – मजदूर बेहोश हो कर गिर जाते हैं।"

अनु प्रोडक्ट्स मजदूर : "नहर पार, तिगाँव रोड़ स्थित फैक्ट्री में कीटनाशक दवाई बनती है। मजदूरों को आये दिन गैस लगती रहती है – उल्टी, जी मिचलाना, सिरदर्द। दिन में फैक्ट्री में एक डॉक्टर रहता है और उसका नुस्खा है : नहा लो। रात को गैस लगने पर सुपरवाइजर नहाने को बोलते हैं। कभी-कभी हालत ज्यादा गम्भीर होने पर दिल्ली ले जाते हैं और फिर उस मजदूर का पता नहीं चलता। फैक्ट्री में 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं और काम करते 300 मजदूरों में 150 कैजुअल हैं तथा 120 को चार ठेकेदारों के जरिये रखा है। तनखा से ई.एस.आई. के पैसे काटते हैं पर कार्ड नहीं देते इसलिये हम ई.एस.आई. से दवाई नहीं ले सकते। निकाल देने पर पी.एफ. के पैसे के लिये पहले फार्म भरने में कम्पनी चक्कर कटवाती है और फिर भविष्य निधि कार्यालय चक्कर कटवाता है। इधर जुलाई की तनखा 13 अगस्त तक नहीं दी तब दिन की शिफ्ट में हम ने काम बन्द कर दिया – अरजेन्ट माल फँसा था। इस पर मैनेजर ने ठेकेदारों को बुलवा कर तनखा बँटवाई।"

एस.पी.एल. इन्डस्ट्रीज वरकर : "प्लॉट 22 सैक्टर-6 स्थित फैक्ट्री में पहली मंजिल पर 3 ठेकेदार, दूसरी पर 4 और तीसरी मंजिल पर पता नहीं कितने ठेकेदार हैं। ठेकेदारों के जरिये रखे किसी मजदूर को कार्ड नहीं देते – गार्ड बदलते रहते हैं और हर छठे-सातवें दिन गार्ड गेट पर रोक कर बगल में खड़ा कर देता है तब ठेकेदार या सुपरवाइजर आ कर अन्दर ले जाता है। ई.एस.आई. व पी.एफ. के नाम पर जून में हर मजदूर से फोटो ली थी, कुछ की फैक्ट्री में खिंचवाई थी परन्तु जुलाई में सब को फोटो वापस कर दी – ई.एस.आई. व पी.एफ. का कोई फार्म नहीं भरा। दिन वाले मजदूरों को ठेकेदार 8 घण्टे पर 30 दिन के 1500 रुपये देते हैं (कुछ पीस रेट वाले भी हैं) और रात वालों को कोई ठेकेदार 1600-1700 तो कोई 1800 रुपये देता है। दिन में हो चाहे रात में, फैक्ट्री में रोज 12 घण्टे तो काम करना ही करना पड़ता है – आधा घण्टा भोजन का और आधा घण्टा दो बार की चाय का काट कर 3 घण्टे ओवर टाइम के पैसे 7½ रुपये प्रति घण्टा के हिसाब से देते हैं। कैन्टीन 24 घण्टे खुली रहती है पर रातवालों के लिये भोजन नहीं बनता – रात 8 बजे भोजन उन दिन वालों के लिये होता है जिन्हें रात को भी रोकते हैं। एक चाय 3 रुपये की और भोजन 10 रुपये में जिसमें पेट नहीं भरता – चाय के लिये पैसे नहीं होते। फैक्ट्री में शिफ्ट बदलती नहीं – रात वाले लगातार रात में ही रहते हैं। लगातार रात की ड्युटी के कारण नींद पूरी नहीं होती। तीसों दिन रात को काम आफत है। खड़े-खड़े काम करना पड़ता है – सुपरवाइजर बैठने नहीं देते। रात को फैक्ट्री में 15-16 वर्ष के लड़के भी काम करते हैं। ठेकेदारों के जरिये रखे हम मजदूरों को जुलाई की तनखा आज 19 अगस्त तक नहीं दी है।"

महावीर डाइकास्टिंग मजदूर : "सैक्टर-24 में प्लॉट 272-273 तथा 153 स्थित फैक्ट्रियों में प्रेशर डाइकास्टिंग, फाइलिंग-फैटलिंग, पावर प्रेस और सी एन सी विभागों में स्थाई मजदूर ढूँढने पड़ेंगे – कम्पनी ने सब वरकर ठेकेदारों के जरिये रखे हैं। बरसों से

(बाकी पेज दो पर)

अल्पाइन लैदर

अल्पाइन लैदर मजदूर : "प्लॉट 18 व 24 सैक्टर-27 ए स्थित फैक्ट्री में शिफ्ट सुबह 9 बजे शुरू होती है पर उसके खत्म होने का कोई समय नहीं है – रात 11½ व बैल्ट विभाग में रात 1½ बजे सामान्य तौर पर छोड़ते हैं, 3½ बजे तक रोक लेते हैं और फिर सुबह 9 बजे ड्युटी आना। रोज 13½-15½-17½ घण्टे काम की वजह से नींद पूरी नहीं होती। काम करते समय हम मुँह धोते रहते हैं। नींद की कमी के कारण हर कोई चिड़चिड़ा रहता है – तनाव को आपस में निकाल कर अथवा परिवार में निकाल कर रिश्ते खराब करते हैं। हमारे पास कपड़े धोने तक का समय नहीं होता। 13½-17½ घण्टे काम के असर को जो समझ जाते हैं वो नौकरी छोड़ देते हैं – फैक्ट्री में रोज शाम को 15-20 का हिसाब होता है (अकाउन्ट वाले प्रत्येक दिन मुख्य द्वार पर हिसाब देने आते हैं) और रोज सुबह 15-20 की भर्ती होती है। बहुत कम मजदूर टिकते हैं।

"अल्पाइन लैदर में काम करते 550 मजदूरों में जो 15-20 स्थाई थे उन्हें कम्पनी ने सुपरवाइजर बना दिया है। फैक्ट्री में 65-70 सात महीने वालों को दस्तावेजों में दिखाते हैं – उनके हाजरी कार्ड पर अल्पाइन लिखा होता है, ई.एस.आई. व पी.एफ. हैं, पे-स्लिप देते हैं। फैक्ट्री में काम करते बाकी 475 मजदूर रिकार्ड में हैं ही नहीं – हाजरी कार्ड पर कम्पनी का नाम नहीं, ई.एस.आई. व पी.एफ. नहीं, पे-स्लिप नहीं। रात 1½ बजे छूटने पर बिना कम्पनी के नाम के हाजरी कार्ड के कारण रास्तों में पुलिस परेशान करती है। पलवल, सैक्टर-3, तिगाँव, डबुआ, नहर पार, मेवला महाराजपुर, बॉर्डर की कॉलोनियों से ड्युटी करने आते मजदूर रात 1½ बजे छूटने पर या तो साइकिलों से जायें या 15-20 वरकरों को मथुरा रोड़ के दोनों तरफ खड़े देख कर ट्रक वाले बैठा लेते हैं अथवा कॉल सैन्टर वाली खाली गाड़ियाँ – रात 1½ बजे ऑटो नहीं चलते।

"अल्पाइन लैदर में इंग्लैण्ड व जर्मनी निर्यात के लिये चमड़े के ताबूत, टोपी, महिलाओं के थैले-बटुये-दस्ताने-आभूषण बॉक्स-बैल्ट बनते हैं। मशीनों पर सिलाई, चमड़ा काटना, फिनिशिंग ही की जाती है – ज्यादातर काम हाथ का है और कारीगर कानपुर आदि से आते हैं। कटरनी, रापी, हथौड़ी से चोट लगती रहती हैं – ई.एस.आई. नहीं, कम्पनी प्रायवेट में इलाज करवाती है।

" अल्पाइन लैदर फैक्ट्री में साफ-सफाई, कूलर, ठण्डा पानी का प्रबन्ध है। कोई खास गन्द भी नहीं उड़ती। मैनेजिंग डायरेक्टर अजय लेखा पत्नी के साथ रोज फैक्ट्री आते हैं पर कार्यस्थल पर विदेशी ग्राहकों के साथ ही आते हैं। फैक्ट्री में कैन्टीन नहीं है – सुबह 10½ बजे चाय, साँय 6½ बजे चाय-मट्ठी, रात 12½ बजे चाय-मट्ठी कम्पनी देती है। फैक्ट्री में एक ही शिफ्ट में दो भोजन अवकाश हैं – दिन में एक बजे और फिर रात 8½ बजे, फैक्ट्री के बाहर रेहड़ियों पर मजदूर भोजन करते हैं।

"अल्पाइन लैदर में हैल्पर की तनखा 2200 रुपये और कारीगर की 2600-4200 रुपये। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। एक दिन की ट्रायल के पैसे नहीं देते। मैनेजर-सुपरवाइजर मजदूरों को गालियाँ देते हैं और जनरल मैनेजर स्टाफ वालों को गाली देता है।"

डाक पता : मजदूर लाईब्रेरी, आटोपिन झुग्गी, एन.आई.टी फरीदाबाद–121001

दिल्ली से-

कानून : ●37-40 दिन काम करने पर 30 दिन की तनखा, अगले महीने की 7-10 तारीख तक दे ही देना; ●8 घण्टे की ड्युटी, तीन महीने में 50 घण्टे से ज्यादा ओवर टाइम काम नहीं, ओवर टाइम का भुगतान वेतन की दुगनी दर से; ●अब 8 घण्टे की ड्युटी और साप्ताहिक छुट्टी पर दिल्ली सरकार द्वारा निर्धारित कम से कम तनखा हैल्पर के लिये 3166 रुपये और कारीगर के लिये 3590 रुपये महीना है। *दिल्ली सरकार ने डी.ए. के पीछे के 32 रुपये तथा 150 रुपये की घोषणा के बाद इस बार के डी.ए. के 121 रुपये का ऐलान भी कर दिया है। डी. ए. एरियर के 1466 रुपये बनते हैं।*

एम. एल. सागर एक्सपोर्ट वरकर : "बी-48 ओखला फेज I स्थित फैक्ट्री में ठेकेदार के जरिये रखे हैल्पर की तनखा 2200 रुपये। इन 2200 में से ई.एस.आई. व पी.एफ. के पैसे काटते हैं — ई. एस.आई. कार्ड नहीं देते। जुलाई की तनखा आज 17 अगस्त तक नहीं दी है।"

नाम नहीं बताते : "डी-80 ओखला फेज I स्थित फैक्ट्री में हम 60 कारीगर एक्सपोर्ट कम्पनियों के लिये सिलाई का काम करते हैं। हर रोज 12 घण्टे काम, जब-तब पूरी रात भी रोक लेते हैं। हमें 12 घण्टे के 150 रुपये देते हैं। ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं, कोई छुट्टी नहीं।"

किसान-मजदूर-बेरोजगार : "हिस्से में एक बीघा जमीन आई। बटाई पर जमीन ले कर पत्नी के संग मैं बहुत मेहनत करने लगा। पूरा नहीं पड़ता था। हाड़-तोड़ मेहनत करते हुये भी गाँव में मुझे कहते कि कुछ करते क्यों नहीं और फिर पत्नी भी यही कहने लगी। कुछ करो का मतलब शहर जाओ कमाने। पत्नी बच्चों को गाँव में छोड़ कर सन् 2000 में दिल्ली में छोटे भाई के पास पहुँचा। बी-123 ओखला फेज I में जिप बनाने वाली फैक्ट्री में 2000 रुपये तनखा पर लगा। हफ्ते में 6 दिन 12 घण्टे ड्युटी — ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। ई. एस.आई. व पी.एफ. नहीं। दो साल बाद घर गया और लौटने पर कम्पनी ने नहीं रखा। तब मोडलामा (बी-33 ओखला फेज I) में लगा। तनखा 2800 कुछ रुपये देते थे पर रविवार की छुट्टी नहीं। तीन महीने बाद कम्पनी ने मेरा नाम बदला और 6 महीने बाद निकाल दिया। फिर 70 रुपये दिहाडी पर एफ 3/5 ओखला फेज I में लगा। अब फिर काम की तलाश में हूँ।"

एस.एम.बी. पोलीमर्स मजदूर : "डी-144 ओखला फेज I स्थित फैक्ट्री में 12-12 घण्टे की शिफ्ट हैं। हैल्पर को 12 घण्टे पर 26 दिन के 2200 रुपये। ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं।"

छह महीने में : "दिल्ली में पहले-पहल ठेकेदार के जरिये ओखला में मयुर एक्सपोर्ट में लगा। तीस दिन 8 घण्टे के 1500 रुपये। शिफ्ट सुबह 9 से रात 9 बजे — ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। साप्ताहिक छुट्टी नहीं। ई.एस.आई. व पी.एफ. नहीं। खड़े रहना पड़ता था, हर समय धागे काटना, तनखा कम — दो महीने बाद नौकरी छोड़ दी। फिर ए-26 ओखला फेज I में लगा। यहाँ भी 30 दिन 8 घण्टे के 1500 रुपये, ठेकेदार, 12 घण्टे ड्युटी— रात 1 बजे तक भी रोक लेते, ओवर टाइम सिंगल, ई.एस.आई. व पी.एफ. नहीं। खड़े-खड़े धागा काटना- तीन महीने बाद छोड़ दिया। अब डी एस आई डी सी शेड 33 ओखला फेज I में लोहे के नट-बोल्ट बनाने वाली फैक्ट्री में लगा हूँ। यहाँ 1800 रुपये तनखा है — रविवार की छुट्टी। फैक्ट्री में सुबह 8½ से रात 8 बजे तक ड्युटी — ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। ई.एस. आई. है पर पी.एफ. नहीं।"

साँई आस्था एक्सपोर्ट मजदूर : "डी-14/9 ओखला फेज I स्थित फैक्ट्री में फिनिशिंग का काम होता था। काम सुबह 9½ से रात 8 बजे तक तो था ही, रात 2 बजे तक कुछ ज्यादा ही रोकते थे। हैल्पर की तनखा 2200 रुपये। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। ई.एस. आई. नहीं, पी.एफ. नहीं। जून में फैक्ट्री बन्द कर हम 60 मजदूरों को सड़क पर धकेल दिया।"

न्याय उर्फ फरेब

वकील : "श्रम न्यायालय द्वारा मजदूर के हक में कोई निर्णय होता है तो उसे लागू करवाने के लिये श्रम आयुक्त के पास चण्डीगढ भेजा जाता है। चढावा देने नहीं जाओ तो आमतौर पर वहाँ से दो-तीन साल में मामला जिले के उपायुक्त को भेजा जाता है। कम्पनी से वसूली की कार्रवाई के लिये उपायुक्त मामले को एस.डी.ओ. सिविल को भेज देता है और यह साहब इसे श्रम अधिकारी को भेज देता है। फरीदाबाद में चार सर्कल हैं और प्रत्येक के श्रम अधिकारी के पास लागू करने के लिये भेजे गये श्रम न्यायालय के 37, 47, 61,....फैसले लम्बित पड़े हैं। कारण पूछने पर बताते हैं कि श्रम अधिकारी को वैधानिक शक्ति नहीं है। देनदार कम्पनी को तलब करने, न्यायालय के निर्णय पर अमल करवाने के लिये देनदार कम्पनी की सम्पत्ति कुर्क करने की शक्ति कानून ने श्रम अधिकारी को नहीं दी है। अतः जो सक्षम नहीं हैं उनके पास श्रम न्यायालय के निर्णय लागू करवाने के लिये भेजे जाते हैं और वे उन्हें लौटा देने की बजाय अपने पास ले कर बैठे रहते हैं।

"सिविल न्यायालयों के फैसले भी काफी लम्बे समय तक उन्हें लागू करवाने वाली अदालत में लम्बित रहते हैं। देनदार अनावश्यक प्रार्थना-पत्र, आपत्ति आदि दर्ज कराते रहते हैं तथा कार्यवाही में प्रॉक्सी हाजरियाँ चलती हैं। समन/नोटिस/वारन्ट जानबूझ कर तलब नहीं करवाये जाते — इसे दुकानदारी बना लिया है, आय का साधन बना लिया है।" ***(किस्सा केस जीते मजदूर का अगले अंक में।)***

● *कैजुअल व ठेकेदारों के जरिये रखे जाते वरकरों की 1200-1500-2000 रुपये तनखा और 12 घण्टे ड्युटी स्थाई मजदूरों के लिये भी आफत लिये हैं।* ***व्हर्लपूल कम्पनी*** *ने 16 अगस्त को हरियाणा सरकार को पत्र लिख कर 595 स्थाई मजदूरों की छँटनी की अनुमति माँगी है। केल्विनेटर की फरीदाबाद फैक्ट्रियों में स्थाई मजदूरों व स्टाफ की सँख्या 8500 थी। व्हर्लपूल कारपोरेशन ने 1995 में केल्विनेटर की फैक्ट्रियाँ लेते ही पहले झटके में 2500 स्थाई मजदूरों व स्टाफ की छँटनी की। व्हर्लपूल द्वारा कम्प्रेसर डिविजन टेकमसेह कम्पनी को देने के बाद भी व्हर्लपूल और टेकमसेह में स्टाफ व मजदूरों की छँटनी का सिलसिला लगातार चला है। टेकमसेह ने स्थाई मजदूरों की सँख्या 1480 से घटा कर 620 कर दी है और उत्पादन तीन गुणा बढा दिया है। व्हर्लपूल ने वी आर एस- सी आर एस के जरिये स्थाई मजदूरों की सँख्या घटाते- घटाते 1382 कर दी और उत्पादन ढाई गुणा बढा दिया। अब इन 1382 स्थाई मजदूरों में से 595 की छँटनी के लिये व्हर्लपूल मैनेजमेन्ट ने कार्रवाई आरम्भ कर दी है। और,* ***टेकमसेह*** *में ऐसा मैनेजमेन्ट- यूनियन त्रिवर्षीय समझौता हुआ है कि कोई डी. एल. सी. ही उसकी बड़ाई कर सकती है। स्थाई मजदूरों को दो पैसे अधिक पर फूल कर कुप्पा होने की बजाय हालात की निर्ममता को समझने की जरूरत है — बदलने के लिये समझने की जरूरत है।* ●

आप-हम क्या-क्या करते ...(पेज एक का शेष)

काम करने जाते हैं। मैं छठी में फेल हो गया तब माँ बोलती कि पढता नहीं, खेलता रहता हूँ.... नहीं पढने का फैसला कर मैं काम के चक्कर में लगा। मेरे दो छोटे भाई स्कूल जाते हैं। नौकरी मजबूरी से भी करता हूँ और राजी से भी ..... जब खाली बैठा होता हूँ तब नौकरी को मन करता है और जब नौकरी कर रहा होता हूँ तब नौकरी छोड़ने को मन करता है।

"दुकानदार हमें 12 घण्टे से ज्यादा की ड्युटी में एक चाय देता है, उसके साथ कुछ नहीं। चाय शाम 7 बजे के आसपास देता है। सामान दुकान से 7-8 फुट बाहर तक सजाया होता है — कोई उठा न ले जाये इसलिये मुझे बाहर भी खड़ा होना पड़ता है। कई बार 5-10 ग्राहक इक्ट्ठे भी आ जाते हैं। पैसों का हिसाब दुकानदार रखता है। रात 9¼ सामान अन्दर रखना शुरू करते हैं। पहले अन्दर का सामान जचाना पड़ता है और फिर बाहर वाला। बीच-बीच में ग्राहक आते रहते हैं। दुकान 10¼ से पहले बन्द नहीं होती, 10½ बज जाते हैं।

"पिताजी साइकिल से लेने आ जाते हैं। घर पौने ग्यारह पहुँचता हूँ। तुरन्त खाना खाता हूँ। रात 11½ बजे सो जाता हूँ पर कभी कभी- नींद देर से आती है।" (जारी)

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एवं सम्पादक शेर सिंह के लिए जे० के० आफसैट दिल्ली से मुद्रित किया। **RN 42233 पोस्टल रजिस्ट्रेशन L/HR/FBD/73**
सौरभ लेजर टाइपसैटर्स, बी-546 नेहरु ग्राउंड, फरीदाबाद द्वारा टाइपसैट।